THE VICE-CHAIRMAN (SHRI D. THENGARI) : The question is:

"That the Bill be returned."

The motion was adopted.

I. RESOLUTION SEEKING DISAPPROVAL OF THE GOLD (CONTROL) AMENDMENT ORDINANCE, 1969 (NO. 6 OF 1969)

II. THE GOLD (CONTROL) AMENDMENT BILL, 1969

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव (बिहार) : मैं यह संकल्प उपस्थित करता हूं कि :— "यह सभा राष्ट्रपति के रूप मे कार्य कर रहे उपराष्ट्रपति द्वारा 3 जुलाई, 1969 को प्रख्यापित स्वर्ण (नियंत्रण) संशोधन अध्यादेश, 1969 (1969 का संख्या 6) का निरनुमोदन करती है ।"

†["That this House disapproves the Gold (Control) Amendment Ordinance, 1969 (No. 6 of 1969), promulgated by the Vice President acting as President on the 3rd July, 1969."]

स्वर्ण नियंत्रण विधेयक जब से आया है तब से विवादास्पद बना हुआ है । यह भयंकर रूप से प्रभावी हुआ है । एक तरफ जहां इस देश के लाखो लाख लोग और इस व्यवसाय में लगे लोग प्रभावित हुए हैं, दूसरी तरफ इसको लाने वाले मंत्री भी प्रभावित हुए है । जिस समय स्वर्ण नियंत्रण कानून को प्रथम बार श्री मोरारजी देसाई लाए थे, इसके प्रभाव की बदौलत वे प्रथम बार मिनिस्ट्री से हटे और पुन: जब उन्होने मेरे ही सामने इस सदन में इस बिल को उपस्थित किया था, तब हमने उनसे आग्रह किया था कि यह बिल ऐसा भयावह है, ऐसे गरीब लोगों पर प्रभाव डालता है, जिसका परिणाम मंत्री को भुगतना पडता है । एक कहावत है "निर्बल को न सताइए जाकी मोटी हाय, मरे चाम की सांस सौ लोह भस्म हो जाय" । लाखो लाख गरीबों की उसास मे हमारे मंत्री श्री मोरारजी देसाई को पुन: मंत्रिमंडल से हटने के लिए बाध्य होना पड़ा । प्रधान मंत्री जो वित्त मंत्रालय का भार सम्भाले हुए है, मैं उनसे निवेदन करना चाहता हू कि थोड़ी सुविधा के नाम पर इस गोल्ड कन्ट्रोल ऐक्ट के द्वारा उन लाखों लाख सुनारों के परिवारो को, उनकी जान को सकट में न डाले । राजनीतिक दावपेच के लिए बैंको का राष्ट्रीयकरण करके उन तत्वो से वे वाहवाही लूट रही है, 'जिन बिचारों को यह पता भी नही है कि उन्हे बैंक से क्या मिलने वाला है । लेकिन जिनको पता है, जो लाखो लाख लोग गोल्ड कन्ट्रोल ऐक्टसे त्राहि माम, त्राहि माम कर चुके है, उनकी त्राहि माम को पाहि माम मे बदलने के लिए आप तैयार नही हो सके । आज वित्त मंत्रालय आपने सम्भाला है और यह आश्वासन दिया है कि आप इसके द्वारा कुछ प्रगति लाएगी । हमारे दल ने स्वर्ण नियत्रण विधेयक का शुरू से विरोध किया है । आज जब यह अवसर मिला है तो मै यह कहता हूँ कि इस नए विभाग के मिलने के बाद आपको मौका मिला था कि थोड़ी सी सुविधा न लेकर सारे ऐक्ट को समाप्त कर दे जिससे लाखो लाख परिवारों का भाग्य बदले लेकिन वैसा नही हुआ । जब इन लोगों ने सुप्रीम कोर्ट मे आपके ऐक्ट को चेलेज किया और सुप्रीम कोर्ट ने कुछ धाराओं को असगत मानकर इनवैलीडेट कर दिया, तो आपने उनको सुधारने की कोशिश की है और उसमें कुछ जोड़ने की भी कोशिश की है । अगर जोड़ने वाली धाराओ को भी चैलेज किया जायेगा, तो पता नही वे धाराए भी टिकेगी या नही टिकेगी ।

अब मै कुछ मूलभूत प्रश्नो के बारे मे आपसे जानना चाहता हू । जिस समय इस बिल को लाया गया था, उस समय कहा गया था कि देश के सामने जो समस्या है, तस्कर व्यापार जो बहुत प्रबल रूप से हो रहा है, इस ऐक्ट के आने से वह तस्कर व्यापार रुकेगा, लाखो रुपया जो दूसरे देशों को चला जाता है वह नही जायेगा । क्या तस्कर व्यापार रुक गया ? तस्कर व्यापार मे जितने सोने को पकड़ा गया है उसी से मालूम हो जायेगा कि सोने का व्यापार बहुत ही बड़ा है । अगर उसको रोकने वाले

†[ ] English translation.

कर्मचारी ईमानदार होते, दक्ष होते तो उसमे भी सैकड़ो गुना अधिक सोना पकड़ा जा सकता था। पहले सोना समुद्र के रास्ते से आता था। अब नेपाल सीमा से तस्कर व्यापार होता है। इसका भारत की अर्थ-व्यवस्था पर प्रबल रूप मे प्रभाव पड़ने वाला है। पहले वहा तस्कर व्यापार होता था चीनी का, फाउन्टेन पेन का, ट्राजिस्टर का, टेरीलीन का, टार्च का, लेकिन आज वहां तस्कर व्यापार होता है सोने का, चादी का। नेपाल प्रसिद्ध था 17-18 करोड़ रुपये के गांजे के तस्कर व्यापार के लिए। आज वहां पर गिफ्ट पार्सल के द्वारा पता नही कौन-कौन सामान आता है, जिसकी खपत नेपाल मे न होकर— भारत मे होती है। भारत मे खपत होने के कारण आज भारतीय व्यवसाय पर, अर्थ-व्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। सोना पहले जहां समुद्र के रास्ते आता था, अब पहाड की बगल से भी आ रहा है। तस्कर व्यापार आपके इस कानून से रुका नही।

आपने दूसरी इच्छा प्रगट की कि देश मे सोना जेवर के रूप मे बन्द कर दिया जाता है, जिसे कि व्यापार मे लगा कर देश की सम्पत्ति का सम्वर्धन करना चाहिए, वह नही हो रहा है। देश की जनता जो सोने का व्यवहार कर रही है, जेवर के रूप मे या धनी जो सोने को ईटों के रूप मे या दूसरे रूप मे घरो मे रखते है, मै जानना चाहता हूं कि क्या वह सोना आपके कानून बनाने से बाहर निकल आया? परिवार नियोजन पर आपकी सरकार लाखों-करोडो रुपया खर्च करती है ताकि देश की आबादी न बढ़े। भगवान ने आदमी को जब भेजा है तो खाने के लिए जहां मुह दिया है वहां काम करने के लिए दो शक्तिशाली भुजा भी दी है ताकि तुम अपना भरणपोषण और देश का भरणपोषण करो और सुरक्षा के लिए अपनी ताकत की आजमाईश करो, लेकिन सरकार तीन पंचवर्षीय योजनाओं के बाद भी लोगो के हाथों को काम नही दे सकी, इसलिए उनके मुह को ही बन्द करना चाहती है। ऐसे कामों के लिए आपकी सरकार करोड़ों रुपए खर्च करती है। अगर सचमुच में आप चाहते हैं कि जनता सोने का व्यवहार जेवर के रूप मे न करे, सोना देश के व्यवसाय में, प्रगति में लगे, जिससे देश की सम्पत्ति की वृद्धि हो तो मैं आपसे पूछना चाहता हू कि आपने उसके लिए क्या किया? लोगो के मनोभाव को बदलने के लिए आपने क्या किया? आपने कुछ नही किया। मैं जानना चाहता हू कि फिर इस ऐक्ट को लाकर किस प्रकार आप चाहते है कि जनता सोने का जेवर के रूप मे व्यवहार न करे। अगर आप भारतीयता से परिचित है, अगर भारतीय लोगो से आपका परिचय है, तो आपको यह मालूम होना चाहिए कि सोना उसका सामाजिक अंग बन चुका है। खासकर इस कांग्रेसी शासन में जब रुपए का मूल्य कुछ नही रह गया है, आपके सिक्के का मूल्य 10 पैसे नही रह गया है, उस समय लोग सोचते है कि इस सोने का मूल्य ही प्रभावी है। तीन पचवर्षीय योजनाओ मे दो तरह के लोगो के पास ही सम्पत्ति की वृद्धि हुई है, एक है सरकारी अफसर जिनकी तस्करी रोकने के लिए और दूसरे लाइसेंस देने के लिए ऐसी जगहो पर रखा है जहां वे काले पैसे कमा सकते है। उस काले पैसे को न बैंक में जमा कर सकते है, न जायदाद खरीद सकते है, न मकान बना सकते है। उनके सामने सोना खरीदने के सिवा दूसरा चारा नही है। दूसरे बड़े बडे सम्पत्ति वाले लोग है, जिन्होंने इन योजनाओ मे लाखों, करोड़ो रुपए कमाए हैं और आपके इनकम टैक्स से बचने के लिए करोड़ो रुपयों का सोना खरीद कर अपने घर के नीचे बन्द करके रखते है। इसको रोकने के लिए आपने क्या किया है? और अगर इसको रोकने के लिए, इस मनोभाव को बदलने के लिए आपने कुछ नही किया तो आपका यह ऐक्ट किस प्रकार से उसे रोक सकता है। मै आपसे जानना चाहता हूं कि भारतीय परंपरा मे शादी विवाह के अवसर पर लोग जेवर का व्यवहार करते हैं और दो बातों के लिए उनका व्यवहार होता है। पहले तो अपनी पुत्रवधू को सजाने के लिए सोने का लोग उपयोग करते है और उसके साथ ही उनका यह मंशा रहता है कि

[श्री जगदम्बी प्रसाद यादव]

इस रूप मे एक बैक वे अपने परिवार को दें जो उनको समय पर काम आये। आपके कानून के बदलते हुए स्वरूप को देख कर परिवार के लोगों को आशंका होती है और वे सोचते है कि कौन ऐसी चीज दी जाये कि जो समय पर परिवार के काम आये। आज आपने बिहार बैंक को स्टेट बैंक में मिला लिया है। बिहार बैंक में जिन लोगों का रुपया जमा है, आप उनकी हालत बिहार मे जाकर देखें कि क्या हो रही है। उनके व्यवसाय रुक गये है, उनका कारबार रुका रहता है। आप कहते हैं कि हिसाब ठीक होगा तो रुपया देंगे। क्या इससे वहा के लोगो का काम चलेगा? आपके हर काम से लोगो की आशका बढ़ती है और विश्वास नही बढता है। जब तक लोगो मे आपके प्रति विश्वास नहीं बढ़ेगा तब तक आपका कानून कैसे उन लोगो के लिए लाभदायक होगा?

यद्यपि यह छोटा सा बिल लोगों को सुविधा के लिये है, किन्तु यदि आप लोगो को वास्तव मे सुविधायें देते, तो मै आपकी प्रशसा करता। कहता कि चलो, जल्दी नही तो देर से ही सही, अंधेरे को दूर करने की ओर सरकार का कदम तो बढ़ा और वह प्रशसनीय है। किन्तु मुझे यह जानकर अफसोस होता है कि सरकार को भी यह पता नहीं होता कि देश मे कितने सोने के व्यवसायी है। अगर सरकार सोचती है कि जो सोने चादी की दुकाने करते है वे ही सोने के व्यापारी है, तो इस व्यवसाय को अपनाने के लिये जो कोयले के या दूसरे धधे के लोग आना चाहते है उनके लिये सरकार क्या व्यवस्था कर रही है। बिहार की विधान सभा मे इस प्रकार का एक प्रश्न आया था और सरकार ने उनको कुछ सुविधाये देनी चाही, लेकिन वह स्वर्ण नियत्रण कानून से बंधे थे। वे सुविधाये बड़े व्यापारियों तक को तो क्या, छोटे सुनारो तक को नही मिल पायी। मै कहना चाहता हू कि सरकार के हर कदम के पीछे जनता का विश्वास रहना चाहिये। यही लोकप्रिय सरकार का सबसे बड़ा आधार है और इसी आधार पर कोई लोकप्रिय सरकार शासन करती है। इसी पर जनतत्र चलता है और उसके आधार पर इस कानून का क्या महत्त्व रहता है?

मै इसी सदर्भ मे आपसे एक बात और जानना चाहता हू। अब तो इस कानून को बने हुए कुछ दिन हो गये है और सरकार को भी इसका कुछ अनुभव प्राप्त हुआ होगा। सरकार इसका अनुभव ले रही है। मै उससे जानना चाहता हूं कि गोल्ड कंट्रोल ऐक्ट मे जो डीलर्स इसे डील करते है, उन्होने जब चैलेज किया तो कुछ सुविधाये उनको मिल गयी, लेकिन सोने का व्यवसाय करने वाले छोटे-छोटे जो सुनार थे, उनको सुविधाये देने के बारे में सरकार ने कोई विचार क्यो नही किया? आपने जो ऐक्ट यहाँ रखा है उसके दो चार पहलू मै आपके सामने रखना चाहता हू। इसके चलते जो आपके अधिकारी होगे वह किस प्रकार अपनी शक्ति का दुरुपयोग करेगे उस सबध मे मै आपके सामने क्लाज 6(ए) की दो, तीन पंक्तियां रखना चाहता हूं:

> ". . . as may be prescribed in this behalf and after making such enquiry in respect of those matters as he may think fit, specify that the licences should be issued"

आपके अधिकारी उसको तब तक फिट नही मानेगे जब तक उनकी पाकेट गर्म नही हो जायेगी और ऐसे अधिकारियों के द्वारा छोटे-छोटे व्यापारी जो उनकी पाकेट गर्म नही कर सकेंगे, उनको लाइसेस मिलने में कितनी गड़बड़ी होगी, इसका आप अदाजा कर सकते है। जो बड़े है वे तो आपके अधिकारियो से मिल कर तस्करी का व्यापार कर लेते है और उसके साथ ही वे दूसरे व्यापार भी कर लेते है, लेकिन जो छोटे है उसके लिये कोई निदान नही है। इसलिए मै चाहता हूं कि आपने जो अनुभव प्राप्त किया है, उसके आधार पर आप बतायें इस सदन को कि आप इस कानून के द्वारा सरकार को, राष्ट्र को और जनता को क्या लाभ हुआ और क्या यह सही नही है कि इस कानून के चलते जो सीधे सादे जीवन बिताने वाले सुनार थे वे उजड़ गये। क्या आपके इस कानन ने

उन सुनारों को बाध्य नहीं किया कि वे तस्करी का व्यापार करें और क्या वे मजबूर नही हो गये कि अगर वे जीना चाहते हैं और परिवार को जिन्दा रखना चाहते हैं, तो बेईमानी भले ही हो, लेकिन वह बेईमानी ही करें। क्या आपने देहात में रहने वाले सुनारों को सदा के लिए पायमाल नही कर दिया ? आपने इतना कठिन कानून बनाया है। क्या आप समझते हैं कि इस कानून का इंटरप्रेटेशन छोटे-छोटे लोग, जो देहातों में या शहरों में रहते हैं, जो अनपढ़ हैं, कर सकेंगे और वे इसको समझ सकेंगे ? क्या इस से जो लाभ या हानी उनको होगी उसको वे समझ सकेंगे ? और अगर नहीं तो आप मुझे बतायें कि सचमुच में क्या आपको इस कानून से कुछ अनुभव प्राप्त हुआ है जन जीवन को देख कर और अगर आपको जन जीवन को देख कर कुछ भी अनुभव प्राप्त हुआ होगा, तो मैं सोचता हूं कि आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि यह कानून या तो बिलकुल समाप्त कर देने योग्य है या यह आमूल-चूल परिवर्तन चाहता है। जो इस बिल का असली मंतव्य है कि देश में तस्करी न हो, सोने को छिपा कर रखने की प्रवृत्ति खत्म हो, सोने का सदुपयोग हो और देश का रुपया बाहर न जाय और सचमुच में आप अगर इसको कार्यान्वित करना चाहते हैं, तो आपको तस्करी को तो रोकना ही होगा। चाहे जैसा भी हो और उसके साथ जो काला धन बढ रहा है उसे भी आपको रोकना होगा। आज लोग काले धन से इस पीले धन सोने को खरीद कर रखना चाहते है। अगर आप चाहते हैं कि सोने का उपयोग वास्तविक ढंग से हो तो आपको इसका प्रारूप तैयार कर जनता को देना पड़ेगा। इसके अलावा आपको यह भी करना पड़ेगा कि छोटे लोग जो सोने को बैंक के समान व्यवहार करते है, उनके लिए बैंकों की सुविधा सही तरीके से गांव-गांव में करनी पड़ेगी और उन्हें इसके लिए समझाना पड़ेगा और इसके पहले आपको अपने दिल और दिमाग को दुरुस्त करना पड़ेगा।

अंत में, मैं आपसे कहना चाहूंगा कि इस बिल के चलते जो प्रभाव सुनारों पर पड़ता है, उससे उसकी हाय निकलती है। उसके कारण ही हमारे श्री मोरारजी देसाई का राजनीतिक जीवन संकट में पड़ा और वह मंत्रित्व से तो गये ही। ऐसा न हो कि यह स्वर्ण नियंत्रण ऐक्ट हमारे वर्तमान वित्त मंत्री को भी अपने चक्कर में ले ले। आज जैसी स्थिति कांग्रेस में हो रही है वह अजीब है। अगर सचमुच प्रजातंत्र के सिद्धांत को मान कर कांग्रेस चली होती, तो आज कोई भी अधिकार उसे नही था यहां बने रहने का। हमारे वित्त मंत्री, जो कि हमारी प्रधान मंत्री भी हैं, उनके प्रत्याशी सीधे चुनाव मे हार चुके हैं। कुछ हमारे कांग्रेसी बंधु यह कहने का दावा कर सकते हैं कि श्री गिरी भी हमारे प्रत्याशी है, दबे दबे वह यह बात कह जाते हैं, लेकिन लोग जानते हैं कि कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड ने श्री संजीव रेड्डी को कांग्रेस का प्रत्याशी बनाया, उन प्रत्याशी को घोषित किया और श्रीमती इन्दिरा गांधी ने उनका प्रस्तावक बन कर, यह साबित किया कि वे कांग्रेस के प्रत्याशी हैं, पार्लियामेंटरी बोर्ड के भी और कांग्रेस के भी। और आज वह कांग्रेस का प्रत्याशी हार चुका है और हार चुका है इन दोनों सदनों में भी, इसलिये सरकार को कोई भी अधिकार नहीं था कि वह प्रशासन को अब भी अपने हाथ में रखे, उसे विश्वास प्राप्त करने के लिये रिज़ाइन करके, इस्तीफा दे करके, विश्वास प्राप्त करना आवश्यक था, लेकिन यह सरकार किसी कारण से रिज़ाइन करना नहीं चाहती। जब अपनी ज़रूरत होती है, तब यह डेमोक्रेसी की दुहाई देती है। दल-बदल की बात पर, डिफेक्शन पर, पता नही किस मुंह से यह सरकार कानून बनाने को आगे बढ़ती है। यह सरकार अच्छे अच्छे भाषण देने का प्रयास करती है, लेकिन डिफेक्शन का इतिहास बताता है कि कांग्रेस में डिफेक्शन शुरू से हो रहा है। लेकिन जब तक लोग कांग्रेस में डिफेक्शन करते रहे तब तक तो कोई बात नहीं हुई, लेकिन जब कांग्रेस मे डिफेक्शन प्रारंभ हुआ, तब उनको चिन्ता हुई और मेरा कहना है कि जब सदन में डिफेक्शन के बारे में प्रस्ताव मंत्री जी लाये थे, उसी समय कांग्रेस के मंत्री

[श्री जगदम्बी प्रसाद यादव]

प्रधान मंत्री समेत डिफेक्शन किया था। पता नहीं कि इस सरकार का सचमुच में मारल कैरेक्टर क्या है, नैतिक स्तर क्या है। इसीलिये मैं कहना चाहता हूं कि सचमुच में यदि वित्त मंत्रालय और वित्त मंत्री इन गरीबों की आह से बचना चाहते हैं तो यह गोल्ड नियंत्रण अमेंडमेंट ऐक्ट को समाप्त करें।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI P C SETHI) : I move

"That the Bill to amend the Gold (Control) Act, 1968, as passed by the Lok Sabha, be taken into consideration"

I have heard with great attention the speech made by Mr Yadav. The measure before the House is not the Gold (Control) Act in its original form but a Bill amending certain provisions of the Act and the necessity has arisen on account of the Supreme Court decision Therefore the merits or demerits of the Gold (Control) Act, as a matter of fact, do not form part of the discussions Here we are limiting the subject to certain clauses which have been amended keeping in view the Supreme Court decision but when I come to the reply during the course of the debate, then I will take up some of the major points which are basically connected with the Gold Control policy also Now in my introductory remarks, I would only like to limit myself to the main provisions with which this Bill deals

The Gold (Control Act was passed by the Parliament in 1968 and since then the matter was challenged before the Supreme Court by various persons Therefore I would like to clarify that as far as the Supreme Court judgment is concerned, the Supreme Court has unanimously upheld the legislative competence of Parliament to enact the Gold (Control) Act As far as the challenge to the Act is concerned, the Supreme Court has held that the basic Act stands I would quote from the judgment of the Supreme Court

"It follows, therefore, that in enacting the impugned Act the Parliament was validly exercising its legislative power in respect of matters covered by Entry 52 of List I and Entry 33 of List III."

The Court further observed :

"Parliament is competent to legislate in regard to the subject-matter of the impugned Act "

Therefore, the basic Act of 1968 has not been invalidated by the Supreme Court The Supreme Court during the course of the judgment struck down some of the provisions of the Act and they are . sections 5 (2) (b), 27 (2) (d), 27 (6), 32, 46, 88 and 100 and they were found to be unreasonable where the administrative authority, according to the court, had delegated much more in the hands of the officers and, therefore, on account of this reason and various other reasons, the Supreme Court observed that these provisions were not in order and they have struck it down Therefore now we are coming forward with this Bill with two or three types of amendments One is, to set right those sections which have been invalidated by the Supreme Court and to amend them accordingly, secondly, even if the Supreme Court has not given any judgment with regard to some of the other provisions if they are reading like the provisions which have been struck down by the Supreme Court, we have ourselves taken the responsibility and duty to amend those provisions and sections This is the second set of amendments in this Bill Thirdly we have come before the House with some clauses which are giving certain more clarifications and certain more facilities to the various interests rather than the dealers or goldsmiths, etc This is all that the present Bill says When we will come to the amendments, I shall try to explain as to the various points raised by Mr Yadav as to how the Gold Control came to be there and whether the Gold Control measures have to some extent succeeded He raised the point about smuggling I would try to explain what measures we have taken and whether we have succeeded there or not Of course in the end while speaking on the Resolution, Mr Yadhav brought in many extraneous matters I am not able to appreciate how the Presidential election arises out of the Gold (Control) Act but somehow or other Mr Yadav had some feelings and he wanted to express them and he found this a suitable opportunity to spell out whatever he had in mind with regard to the election He is welcome to do whatever he likes but I can assure him that whatever he has said regarding the Presidential election has no validity whatsoever to the Gold (Control Bill which is before the House

With these words, I commend the Bill for consideration.

The questions were proposed.

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : उपसभाध्यक्ष महोदय, मै चाहता था कि मंत्री महोदय का इस पर कुछ विचार व्यक्त हो जाता, इस पर कुछ विचार हो जाता तो मुझे कुछ संतोष भी होता और यदि संतोष नही होता तो मै अपनी कुछ बाते फिर उनके सामने रखता। खैर, मै इस मौके पर मत्री महोदय से कहना चाहता हू कि शायद मेरे द्वारा उठाये गये विषयो को विषयातर समझ कर वह अलग करना चाहते है।

श्री पी० सी० सेठी : नही, मैने नही किया।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : मै उन विषयो को इसमे जिस प्रकार से लाया था उसको मंत्री महोदय विषयातर समझ सकते है लेकिन जब विषय का सूत्रपात हो जाता है सदन मे तो उसके इर्दगिर्द जितने विषय और चीज है उसका उसमे समावेश हो जाता है। सवाल यह है कि इस ऐक्ट का जिन लोगो पर प्रभाव पडता है उन लोगो की जो बात है, जिनका प्रतिनिधित्व हमे करना है उनकी वाणी को इस सदन के द्वारा सरकार के कानो मे पहुंचाना हम अपना परम पुनीत कर्त्तव्य समझते है और इसलिये आपके कर्त्तव्य की ओर हमने आपका ध्यान आकर्षित किया। मै चाहता था कि सचमुच में आप विश्वास दिलायें कि आप जनतत्र के प्रतिनिधि है और यहां के प्रशासन की पद्धति प्रजातत्रीय है ताकि प्रजा को आपके कामो पर, आपके विधेयकों पर पूरा पूरा विश्वास होता। आप अपना राजनैतिक चरित्र या प्रशासनिक चरित्र जिस प्रकार प्रकट करेगे उसी प्रकार मे आपके भाव प्रकट होगे।

अब मै दो एक बाते प्रैक्टिकल रूप मे आपके सामने रखना चाहता हू। जिस प्रकार से इसके सुप्रीम कोर्ट मे जाने के बाद इसमे अमेडमेट लाये है उस पर आप भी विचार करें कि जितना सोना रखने की छूट आपने सुनारों को दी है उससे उनका काम नही चलता क्योंकि सुनारों का जो रोजगार है वह खासकर उस समय अत्यधिक चलता है जब कि शादी, विवाह के लग्न होते हैं, साल में जितना सोना रखने की आपने छूट दी है उतना सोना उनके पास हो जाता है तो उसका काम चल जाये। जिस समय शादी का 'लग्न होता है' बिहार का मुझे अनुभव है, कभी कभी लग्न इतने प्रचंड रहते हैं कि एक एक आदमी के यहा पन्द्रह पन्द्रह, बीस बीस लोग जेवर रखते है। जितने सोने की आपने छूट दी है उस सोने की छूट मे आप 15 लोगों को ज़ेवर बनाने की सुविधा नही दे सके है इसलिये मै आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करूगा। अगर स्वर्णकार के ज़िम्मे पन्द्रह आदमियो की लिस्ट हो तो उस हिसाब से उतना सोना रखने की उसको सहूलियत मिलनी चाहिये जिससे कि वह सभी ग्राहकों के ज़ेवर बना सके।

दूसरी बात मै यह कहना चाहूगा कि आप स्वर्ण नियत्रण कानून के द्वारा स्वर्ण नियत्रण को सिर्फ सोने का व्यवसाय समझ कर ट्रीट न करे। मै चाहता हूं यह जो परम्परागत पुरानी भारतीय कला है इसको सरक्षण मिले, जैसे आपने और कलाओं की सुरक्षा की गारण्टी दी है। उसी तरह मे इसको भी आप कला के रूप मे स्वीकार करे। आप ऐसी व्यवस्था करें कि स्वर्णकार सोने के आभूषण ही नही बनाएं बल्कि सर्वोत्कृष्ठ कला की चीज प्रस्तुत कर सकें। आपने देखा होगा कि आज विदेशों से अपने भारतीय धातु की बनी अनेक चीजों की मांग बड़े प्रबल रूप मे आ रही है। हमारे देश मे जो विदेशी यात्री आते है वे यहां के सोने के आभूषण को बडे शौक से, दिलचस्पी से पहनते है। जिस तरह से आप टूरिज्म को अपने व्यवसाय की दृष्टि से बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है उसी प्रकार अगर आप उन स्वर्णकारों को एक दिशा देते तो देखते कि किस प्रकार विदेशों से उनकी बनाई चीजो की माग आती और आप अपने व्यवसाय को सब जगह घुमाते तो उसके लिये फारेन मार्केट में जाने की भी सुविधा हो जाती। इससे एक नई दिशा मिलती जिसमे वह आगे बढ सकते थे। लेकिन आपने वह भी नही किया। मै चाहता

[श्री जगदम्बी प्रसाद यादव]

हू आप स्वर्णकारिता को कला के रूप मे स्वीकार करे और कला के रूप मे स्वीकार करने का निदान ढूढे।

मै आपसे एक और अर्ज करना चाहता हू कि आप जब भी सुविधा देने की बात करते है, चाहे वह सोने के व्यवसाय की बात हो तो बडे लोगो को सुविधा की बात करते है। लेकिन मै छोटे-छोटे लोगो की बात करता हू। मै पहले भी कह चुका हू कि सोने के व्यवसाय मे मदद करने वाले कम से कम दस प्रकार के और लोग भी होते है। कुछ ऐसे है जो सोने को ढालते है, कुछ लोहे के पत्तर बना कर देते है। आप तो बडी बडी दुकानो मे गये होगे, लेकिन अगर आप किसी सुनार के यहा जेवर बनाने गये हो तो आपने देखा होगा कि वहा कोयले से भी काम करने वाले होते है। सोने का ढालने के काम मे कोयला आता है और कोयले की भी बिक्री होती है। इस प्रकार इस तरह के आदमी सोने के धधे मे काम पाते है। तो उनके लिये क्या कभी आपने विचार किया। अगर आप चाहते है आपका तिजारत बढे और इसके लिये मौका मिले और आप उनको सुविधा देना चाहे तो इस दृष्टि से अगली दफा आप स्वर्ण नियत्रण कानून मे कुछ न कुछ ऐसा अमडमेट लाये जिससे सभी लोगो को लाभ मिल सके।

SHRI DAHYABHAI V PATEL (Gujarat) I would like to peak

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI D. THENGARI) Members have already spoken I am sorry you were not here Otherwise I would have called you first

SHRI DAHYABHAI V PATEL · I am sorry I did not expect this Bill to be reached so soon

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI D THENGARI) I am also sorry I cannot help The Minister has risen to reply

SHRI DAHYABHAI V PATEL Is he replying to the debate?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI D THENGARI) : Yes

SHRI DAHYABHAI V PATEL : Well, I cannot behave like Mr Rajnarain I cannot do it, Sir If Mr Rajnarain had shouted over this everybody wou'd have yielded to his shouting.

SHRI P C SETHI Sir, as far as the gold policy of the Government of India is concerned it is known that import of gold has been prohibited since 1930 then, Sir, in the year 1962-63, after the Chinese invasion, under the Defence of India Rules it was thought necessary that there should be some restriction on the manufacture of gold ornaments of 22 carat purity, and therefore it was decided that only 14 carat gold ornaments would be allowed to be manufactured Then, Sir later on after a couple of months, on account of the representations made both outside and inside the House and the views expressed by hon Members at that period of time, it was considered necessary as far as 14 carat purity is concerned, that it should be done away with , and since then—I would like to make it clear—as far as the 14 carat purity question in the manufacture of gold ornaments is concerned, that is no more there Now, Sir, as far as the possession of gold ornaments is concerned, there is no restriction whatsoever on the possession of gold ornaments Similarly as far as the dealer or the goldsmith is concerned, he can certainly take to manufacture of gold ornaments, and there is no difficulty with regard to that Then, Sir, as far a the possession of gold bars is concerned certainly pure gold is not allowed to be possessed by any individual But as far as ornaments are concerned, if anybody possesses if any individual family possesses ornaments weighing more than 4,000 grammes that is ornaments worth round about Rs 60,000, then he has certainly to make a declaration, and whenever there is any change in the quantity the declaration has to be made But there is no restriction whatsoever on the possession, Then as far as the dealer is concerned, there is no restriction on the possession of gold bars of standard quality, and the dealer can possess them, and during the manufacture gold ornaments, if the bar is melted ot is provided in the Bill as to what extent pure gold could be possessed by the dealer Similarly, Sir, as far as the

श्री मानसिह वर्मा (उत्तर प्रदेश) : एक स्पष्टीकरण चाहता हू। अभी माननीय यादव जी ने जो कहा था कि जो मैनुफेक्चर करने वाले है, सुनार लोग, अगर उनके पास एक साथ पचास

आदमी आ जाये जेवर बनवाने के लिये और उसके लिये उनके पास काफी क्वाण्टिटी हो जाये सोने की तो क्या उसके लिये कोई रेस्ट्रिक्शन नही है। जैसे कि सीजन चलता है, शादियो के लग्न होते है, तो उस समय बहुत रश हो जाता है जेवर बनाने वालो का। यदि एक ही सुनार के पास काफी सख्या मे ग्राहक आ जाये तो क्या इस प्रकार की कोई सीमा है कि जितना जेवर बनाना चाहे बना सकता है। इसका क्लेरिफिकेशन वह भी चाहते थे मैं भी चाहता हू।

श्री पी० सी० सेठी : जहा तक प्योर सोना रखने का ताल्लुक है, एक डीलर कितना रख सकता है, उस पर रेस्ट्रिक्शन है, एक सुनार कितना रख सकता है उस पर रेस्ट्रिक्शन है। मैं अभी आपको बता देता हू . . .

श्री मानसिह वर्मा : 500 ग्राम का है।

श्री पी० सी० सेठी : जहा तक सुनार का ताल्लुक है, उसको 300 ग्राम तक सोना रखने की उसके अदर छूट है। जहा तक डीलर का ताल्लुक है, डीलर को भी एक निश्चित मात्रा मे सोना रखने की इजाजत है। उससे ज्यादा उनको रखने की इजाजत नही है। लेकिन जहा तक और्नामेण्ट का ताल्लुक है, और्नामेण्ट मे कोई प्रतिबध नही है अगर बनाने वाला पुराने जेवर लाता है। किसी डीलर या सुनार का यदि कोई बिजनेस है उसका तो कोई प्रतिबध नही है लेकिन उसको मैटीरियल खरीदते समय, उसके पास प्योर सोना कितनी मात्रा मे रहे, उस पर प्रतिबध है।

श्री मानसिह वर्मा : तो इसका अभिप्राय यह है कि सुनार एक समय मे 300 ग्राम से अधिक नही रख सकेगा।

श्री पी० सी० सेठी : जहा तक सोनार का ताल्लुक है प्योर गोल्ड एक समय मे उतना नही रख सकेगा लेकिन जहा पहले यह सुविधा 100 ग्राम की थी, बाद मे वह 200 ग्राम की हुई, और अब यह सुविधा 300 ग्राम की है। यह माग की गई कि 300 ग्राम सोना रखने की सुविधा छोटे सुनारो के लिये हो जो कारीगरी का काम करते है। तो उसमे कोई दिक्कत नही होनी चाहिये। वह काम समाप्त करने के पश्चात् वह दूसरा सोना फिर गला सकता है।

श्री मानसिह वर्मा : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, दिक्कत तो 100 ग्राम मे भी नही थी और 300 ग्राम करने के बाद भी नही होनी चाहिये किन्तु यह बात समझ मे नही आ रही है कि जब बहुत बात सारे ग्राहक आयेगे ऐसी हालत मे 300 ग्राम की सीमा रखी जाये। यह बात समझ मे आने वाली नही है। इतना स्पष्ट होना चाहिये कि इसका रखना माना जायगा या जेवर का बनाना माना जायेगा।

श्री पी० सी० सेठी : जहा तक शुद्ध सोना रखने का सबध है कोई भी व्यक्ति 300 ग्राम से अधिक सोना नही रख सकता, मगर जेवर के फार्म मे वह सोना रख सकता है।

What I was trying to explain is this. As far as the present measure is concerned this is only a measure which provides certain guidelines and controls with regard to possession of gold ornaments by the private public, with regard to possession of pure gold by the private public, with regard to the quantity which could be possessed in the form of pure gold by dealers, with regard to the quantity which could be possessed by a *sonar*, etc. This is only to control these things There is no restriction on the purity of gold ornaments which are to be manufactured, there is no restriction on the possession of gold ornaments except to the extent that one cannot hold more than 4000 grammes per family and if it exceeds this limit it has to be declared. Therefore there is no difficulty whatsoever for the normal trade channels.

Now the position with regard to gold is this As far as original production of gold in our country is concerned, it is very limited. It is either available from the Kolar gold mines or from the Hutti mines. As far as the Hutti gold is concerned that is actually going for industrial purposes and therefore it is not possible to divert it for ornament purposes As far as the gold manufactured from the Kolar gold mines is concerned it goes to the Reserve Bank. That also does not come to the market. But between the dealers who are thousands

[Shri P C. Sethi]

in numbers and between the *sonars* who are also about 2 lakhs and 50 thousand it is considered that old ornaments will come for repairs and some quantity of gold will be available from here and there and with that it will go on It is a well know fact that in spite of all these restrictions smuggling of gold is taking place The hon Mr Yadav has mentioned that smuggling of gold takes place not only from the sea routes but now also on the Nepal border. As far as our information goes there is no smuggling of gold or silver on the Indo-Nepal border Smuggling of course is there but it is of a different nature As far as smuggling of gold and silver is concerned it is mostly on the western coast and it is from Dubai We are taking all possible anti-smuggling measures, we have recently amended the Customs Act and have put all sorts of restrictions on the movement of silver We are providing hovercraft to our customs people for keeping a watch We are giving them modern equipment and all other things which are necessary for the purpose

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : नेपाल और बिहार के बॉर्डर पर जनवरी और मई के महीनो मे फौरबिसगज मे जो चीजे स्मगलिग की पकडी गई थी, जो कई लाख रुपया की थी, क्या मत्री जी ने उन चीजा की ओर ध्यान दिया कि उसमे सोना भी था या नही ? जिस तरह से नेपाल मे चीजे स्मगल होकर भारत मे आती है तो साना भी उसके साथ आ रहा है ।

श्री पी० सी० सेठी : नेपाल और बिहार के बोर्डर मे कौन कौन सी चीजे पकडी गई है, इसका ब्योरा मेरे पास नही है । मैंने कहा कि आम तौर पर सोने और चादी का तस्कर व्यापार वेस्टर्न बार्डर मे होता है । इण्डा-नैपाल बार्डर मे इस चीज का व्यापार नही हाता है । एक दो घटनाए हो सकती है ।

I was trying to say that as far as smuggling is concerned, it is there and this smuggling is a drain on our foreign exchange resources Therefore from all points of vi w it was considered necessary that there should be some restriction on gold ornaments or on the use of gold Of course our country has got centuries-old habits of using gold ornaments and therefore unless there is proper social education it is very difficult to completely stop it but at the same time the necessity is there As far as the parent Gold Act is concerned it is there on the statute book from 1968 Now it is anybody's guess, though it is a short period to judge, whether the Gold Control Act has succeeded or not I said the other day in the other House also that it is open for that House and this House as well as for the Government to consider whether the Gold Control Act of 1968 in its original form has succeeded or not That will be a separate matter for consideration Here as far as this Bill is concerned we have a limited purpose which I have explained while introducing the Bill. Therefore I have nothing more to add at this stage except to say that the merits of the Gold Control Act need not be gone into The Supreme Court Judgment pointed out that excessive powers had been given to the administrative authorities and to that extent we have tried to correct it Now it has been provided that with regard to the rules that will be framed both with regard to goldsmiths and with regard to dealers, they will not be arbitrary rules. We will place even the rules before the hon House so that it can approve of them or disapprove or direct us to amend them It is only on the basis of the rules thus approved by Parliament that we shall be basing our policy and control The excessive administrative powers which were supposed to be there according to the previous Act in the hands of the various administrative authorities have been done away with and the present Bill is only to amend that situation

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI D THENGARI) The question is

"That this House disapproves the Gold (Control) Amendment Ordinance, 1969, (No 6 of 1969), promulgated by the Vice-President acting as President on the 3rd July, 1969"

The motion was negatived

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI D. THENGARI) The question is

"That the Bill to amend the Gold (Control) Act, 1968, as passed by the Lok Sabha, be taken into consideration "

The motion was adopted

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI D. THENGARI) We shall now take up clause by clause consideration of the Bill

Clauses 2 to 15 were added to the Bill

Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

SHRI P. C. SETHI : Sir, I move:

"That the Bill be passed."

The question was proposed.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL : Mr. Vice-Chairman, Sir, the history of the Gold Control Bill has had a chequered career in this House as also in the courts. It is not my purpose to go over all that. The Minister has said that the purpose of this Bill is limited to a certain extent; well, I am glad it is. But when the original motion was brought the excuse for bringing this Bill was to remove the lure for gold. This is attempting the impossible because every ordinary student of economics knows that gold has been accepted as a form of international currency all over the world because of its intrinsic quality and value and I think if the Government is trying to undo this, it is attempting the impossible. Even in the Soviet Union—whether they have currency or not—the roubles which they use in their international deals are specified to contain so much of gold value. Whether you have gold currency or not is a different matter. Whether you go by rupee payment or by anything else every currency is specified to be of so much gold value. That shows what importance gold has in the matter of value and currency and the Government is trying to do the impossible by trying to remove this.

As far as the limited purpose of this Bill is concerned I do not think it meets the objection that has been raised from this side of the House.

It hurts the self-employed ordinary craftsman. I know that some little concessions have been given, but as my friend here pointed out, they are not workable. The goldsmith may get ornaments to be made or repaired during a season and for that period the amounts specified here are not practical. Let me ask Members on the opposite side, on the Treasury Benches. I am sure they have marriages in their houses. Do they consider this limit satisfactory for the marriages that take place in their own houses? Let them be honest and say so. Then, I would withdraw my objection to the Bill, but that is not the case. This is not a practical limit that is put in here. I would like the Government to encourage honesty and let people say honestly that this is not enough for a normal middle-class marriage or ordinary class marriage and so much gold is required. Then, that should be permitted It may be that so much gold may be in the family or it may have to be bought, but then if you have these impractical limits, it hurts the trade. It hurts particularly the small, self-employed goldsmith. It does no benefit. It encourages corruption. We hear a number of cases of gold being caught while being smuggled. How much do we not hear of? It is common knowledge and it is said everywhere that for so many cases, one case is caught, so that the police may at least show something on paper that they are doing something. What goes under the observation of the police is something more, larger than these figures. I do not blame the police. If you ask them to do the impossible, they cannot accomplish it. Therefore, Government should realise the futility of such measures and not come forward with such impractical ones. After all gold has been used in this country for years for many purposes, including ornaments. Government has not been able to provide banks or places where people can keep their money in safety. Therefore, people keep it in gold perhaps in their house and perhaps they keep it on the person of their family members. It is one method of keeping their savings. As long as there is no other substitute, such measures do not meet the requirements of the situation and basically our opposition is to a measure of this type, which is not practical. The few modifications that have come about here are as a result of the Supreme Court's ruling. Yet the Government does not seem to understand that this is not the right way of doing it. Well, we can only oppose such Government measures.

SHRI A. P. CHATTERJEE (West Bengal) : Mr. Vice-Chairman, I am not a traditionalist in the style of Mr. Dahyabhai Patel.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: Then, why do you not come in suit? Why do you come in your traditional dress?

SHRI A. P. CHATTERJEE: I do not believe that because the women of India have been wearing gold ornaments, for ages, they must continue to wear them even now. If I were a traditionalist, perhaps I would have asked: Why not paint our bodies as the cavemen did? That also would have been a continuing tradition, because the cavemen at least for thousands of years were painting their bodies in a grotesque fashion. At least they thought it to be an ornament. But that is not a point on which I am going to speak, not from the point of view of tradition, because tradition has often to be broken in order that one might have glimpse into the vista

[Shri A. P. Chatterjee]

of the future. I have to speak on the Bill rather from another point of view and that has been harped upon by some of the speakers who preceded me. In the words of the hon. Minister also we found the same note—though in a very muted manner but then the tone was there—of despondency, the tone that perhaps the Act has failed. Now, that is the point which I want to emphasise. After all, I am speaking on the Third Reading of the Bill and at this stage we may not say so much on the merits of the Bill as we may say about—the future projection of the thought-process which is contained in the Bill. Now, the point is this. Has the Gold Control Act succeeded? Now, it has succeeded in making many young goldsmith commit suicide. The history of the Gold Control Act is a history of starvation, a history of suicides, a history of frustration for many a family of goldsmiths. I am coming from a State where scores of persons committed suicide by drinking nitric acid and that happened also throughout India. Who does not know that this was a pet child born out of the brain of Mr. Morarji Desai, the then Deputy Prime Minister and Finance Minister? Now, he wanted to plug the hole created by devaluation and the fall in foreign exchange earnings caused by devaluation. Also, he wanted to plug the hole which was caused in the economy of the country by deficit financing, but then a deficit financing and any fall in the foreign exchange earnings cannot be plugged, made up or compensated by this kind of Act which has been put on the Statute Book in 1968. It has already passed through some sea changes so to say and ultimately it is not what it was. Again, it has failed in its purpose as has been said by certain hon. Members and as has almost been admitted by the hon. Minister himself, who said it is for the House and also for the Government to consider it. Well, Mr. Sethi was speaking as if he was not a part of the Government. Even what the Government will consider, he does not know, because he said that it is for the Government to consider whether the Act has failed or not. I do not know what he meant, but actually this is what was apparent from what he spoke, that he is also not happy about the success of the Act. Success has eluded him. That is quite clear. Therefore, what is the use of the measure, when it has failed? It would have been all right if an ideal state of affairs could have been brought about by which the women of the country would not be wearing any gold ornament and the gold in the country would be put in the vaults of the banks. If gold is not used in the fashion in which it is being used now, perhaps it would have been very good for all of us. Perhaps it would have been an ideal condition, but then that ideal condition is lacking now. Now, putting so much expenditure on the administrative machinery which will be needed in order to put this Gold Control Act into operation, is a waste. Knowing these administrators, these licences and all the paraphernalia you need, knowing human character, knowing the character of the bureaucrats, I can say these licences and fees create a corruption ring. The persons who wish to get the licences can get the licences by some amount of pressure or by some amount of influence. It may be monetary influence, influence of gold or other influence, but this is the position. Why should we put so much expenditure into this machinery for implementing the Gold Control Act, so that the pet child of Mr. Morarji Desai may still continue to gasp for some time more? It is really gasping, nothing but that, because it has not much of life left in it. Now, that is one thing.

Secondly, after all the fall in foreign exchange earnings cannot be met by virtue of this kind of Gold Control Act. What about the businessmen who always defraud us of foreign exchange by fraudulent means by indulging in under-invoicing and over-invoicing?

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: How much did you lose by devaluation?

SHRI A. P. CHATTERJEE : That could be immediately checked, but that was not done. That is not being done But it has not as yet been so much insistent or so much strict in regard to these businessmen who defraud India of foreign exchange earnings by under-invoicing and over-invoicing.

SHRI S. S. MARISWAMY (Tamil Nadu) : Do you not think that they give some sums to the Congress fund?

SHRI A. P. CHATTERJEE: I do not think, but today or tomorrow we are hoping for the better. Secondly, Mr. Vice-Chairman, this devaluation business, who did it? That 'Troika' or three musketeers, Mr. Subramaniam, Mr. Chowdhury, and—what other man?—the three of them on the 9th June, 1966, when Parliament was not in session took a secret decision to devalue, and for what purposes? So that our export earnings will go up. But the history of our export earnings has shown

that devaluation has depressed our exports and has not increased our exports. You devalue without consulting Parliament, you devalue because Mr. Bell of America has asked you to do it, you devalue because the International Monetary Fund had brought pressure upon you. To plug all these things you bring this Gold Control. The effect of this is that young goldsmiths committed suicide by drinking nitric acid. The purpose of the Gold Control Act is absolutely spoiled. Even the Ministers who wax eloquent will make a present of gold ornaments on the wedding of their near and dear ones. Even though Gold Control is so much in the air, everybody violates it from the top men to the bottommost men.

Therefore, Mr. Vice-Chairman, I would not take much time over this. I think that this is a dead Act. Merely you are trying to inject vitality into it. You are trying to whip a dead horse alive. It is as dead as mutton. What is the use of spending so much and making this machinery alive which will mean so much corruption— I use the word 'corruption'—and so much expenditure? It is better as the hon. Minister has said, for the Government to consider whether this Act has failed or not I think it is high time the Government considered it. Let this Act be scrapped and some other thing brought in, but not this one.

SHRI P. C. SETHI : Mr. Vice-Chairman, it would be of interest to the hon. House to know that free ownership and free trading in gold is not permitted in most of the countries including the U. S A. and the U. K. which are considered to be the most affluent and advanced countries. But, Sir, as I have said earlier, the lure of gold or the desire to possess gold ornaments has been there in our country. In spite of all this it was considered necessary that there should be some restriction on the manufacture of gold ornaments; after the Chinese aggression that was considered necessary. That is why the 14 carat restriction was put. I am unable to understand the argument of Mr. Chatterjee blowing hot and cold at the same time. He said in his opening remarks, when he started speaking, that the habit of painting bodies is an old habit and it should be changed If he considers that the habit of possessing gold ornaments is bad and it has got to be changed then the restrictions should be there At the same time when restrictions were put and 14 carat was introduced and there were difficulties to the goldsmiths he also believed in organising processions and morchas of the goldsmiths and asking for the Gold Control to be scrapped This is something which one fails to understand. Either you are for gold control completely or you are not for gold control. If you are for gold control then the restriction of 14-carat you must accept The House knows very well that the restriction of 14 carat had to go on account of the preponderant views both inside and outside the House That is why the old Act is not there and there is no restriction on the manufacture of gold ornaments of whatsoever purity. The only restriction is that we do not want to have a free entry of gold into our country through smuggling. After all it might be anybody's guess but it is said that more than Rs. 100 crores worth of gold is being smuggled into India, and that is in spite of all the restrictions. Therefore, if you want to make it a completely free market open to all sorts of smuggling, that is a different matter. But you will have to find out and consider ways and means so that the lure of gold goes down, but at the same time we have to keep in view the conditions in our country, the number of people engaged in the gold trade numbering about 2 50 lakhs, and there are more than 12,000 dealers, all those things have been kept in view. That is why according to the present situation the Gold Control Act had to be modified and the 14 carat restriction had to go. Now there is no restriction whatsoever both in the possession and manufacture of gold. . . .

DR. BHAI MAHAVIR (Delhi) . Has it helped in checking smuggling?

SHRI P. C. SETHI It has certainly helped in not allowing that much quantity of gold to come in because the smuggling figures go to show that seizures are on the increase. Therefore, as far as smuggling is concerned, it is there and I do not deny it, it has not subsided, but at the same time seizures are going up and we are trying to improve upon the situation. But, as I have said, this is a matter which could be considered separately on merits or demerits of the case. At the present, as I have said in the initial stage, we have a very limited object before us, and that is amending the present Act in the light of the Supreme Court judgment, and while amending it we are removing the hardship that were prevalent with regard to the goldsmiths, with regard to the dealers, with regard to vicarious liability, with regard to the licensing policy, with regard to new entrants. Originally it was said that no new

[Shri P. C. Sethi]

person would be able to enter. We are liberalising the rules that even a new person could come in.

श्री निरंजन वर्मा (मध्य प्रदेश) : आपने कहा कि उनकी कठिनाइयो को दूर करने के लिए हमने बिल के द्वारा कुछ उपाय सोचे है। आप इस बात को देखिए कि एक देहाती आदमी किसी सर्राफ के यहा आकर सोना बेचता है तो उस सर्राफ से आप क्यो कहते है—आपने इसके लिए कोई नियम बनाया है या नही—कि इसके लिए डिक्लेरेशन दो। गांव का आदमी जो सोना बेचने के लिए आता है उसके बारे मे वह कैसे डिक्लेरेशन दे सकता है ?

श्री पी० सी० सेठी : यही मैं कह रहा था कि जो इस प्रकार की बात इसमे थी, डिक्लेरेशन आदि का सवाल था उसको मोडीफाई किया गया है इस बिल मे जो आपके सामने है। इसी प्रकार सुनारो को लाइसेंस लेने मे जो दिक्कत थी, जो सुनारी का धन्धा नही करता था उसको भी सुविधा दी गई है, जिन लोगो को लोन दिया गया था और वे लोन वापस कर दें तभी उनको लाइसेस दिया जा सकता था उसको भी ढीला किया गया है। और भी कई प्रकार की सुविधाएं लाइसेंस्ड डीलर्स और सुनारो को इसमे दी गई हैं। जो एडमिनिस्ट्रेटिव पावर्स ज्यादा थी वे भी एडमिनिस्ट्रेटिव आफिसर से हटा ली गई है।

श्री निरंजन वर्मा : मेरा मतलब यह था कि जो सर्राफ के यहा गाव वाला सोना लेकर आए, उससे न मागते हुए आप सर्राफ से क्यो कहते है कि वह डिक्लेरेशन दे। यह कैसे आपने उनकी कठिनाइयों का हल सोचा है ?

श्री पी० सी० सेठी : पहले जो इन चीजों के बारे मे नियम थे उनको ढीला किया गया है और उनमें सुधार किया गया है।

जहां तक इस बात का सवाल है कि कोई जेवर लाता है सुधार के लिए, उसमें तो किसी किस्म की दिक्कत नहीं है। जो पहले नियम था, सुप्रीम कोर्ट के जजमेंट के बाद उसमे सुधार किया गया है।

Therefore, Sir, there is nothing more that I have to say with regard to this. I commend my motion that the Bill be passed.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI D. THENGARI): The question is :

"That the Bill be passed."

The motion was adopted.

MOTION SEEKING REVOCATION OF PROCLAMATION ISSUED UNDER ARTICLE 356 OF THE CONSTITUTION IN RELATION TO THE STATE OF BIHAR

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI D. THENGARI) : Mr. Yadav. He is not here. Mr. Ramaswamy.

RESOLUTION RE PROCLAMATION ISSUED UNDER ARTICLE 356 OF THE CONSTITUTION IN RELATION TO THE STATE OF BIHAR

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI K. S. RAMASWAMY) : Mr. Vice-Chairman, I beg to move the following Resolution :—

"That this House approves the Proclamation issued by the Vice-President acting as President on the 4th July, 1969, under article 356 of the Constitution, in relation to the State of Bihar."

Mr. Vice-Chairman, after the general elections of 1967 there was no single party with a majority returned to the Assembly of Bihar with enough strength to constitute a stable Government. There have been about six Ministries in Bihar and only one Ministry headed by Mr. M. P. Sinha was in power for 9 months and 25 days, and all other Ministries were in office for various terms between 4 days and 114 days.

There was no stable Government in Bihar and there was also a period of President's rule there from 30-6-68 to 25-2-69. After the mid-term poll, the strength of all the parties remained almost the same as before except for marginal variations. After the mid-term poll, Shri Harihar Singh formed the Government on 26th February,